Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 13 ~ Issue 9 (September 2025) pp: 08-13
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अम्बेडकर नगर जनपद में मुग़ल कालीन गतिविधियाँ : एक ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक सर्वेक्षण

डॉ0 श्याम प्रकाश (गोल्ड मेडलिस्ट)
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग, डॉ0 श्यामा प्रसाद मुख़र्जी विश्वविद्यालय, राँची

*Received 27 Aug., 2025; **R**evised 02 Sep., 2025; **A**ccepted 04 Sep., 2025 © The author(s) 2025.*
P**ublished with open access at **www.questjournas.org

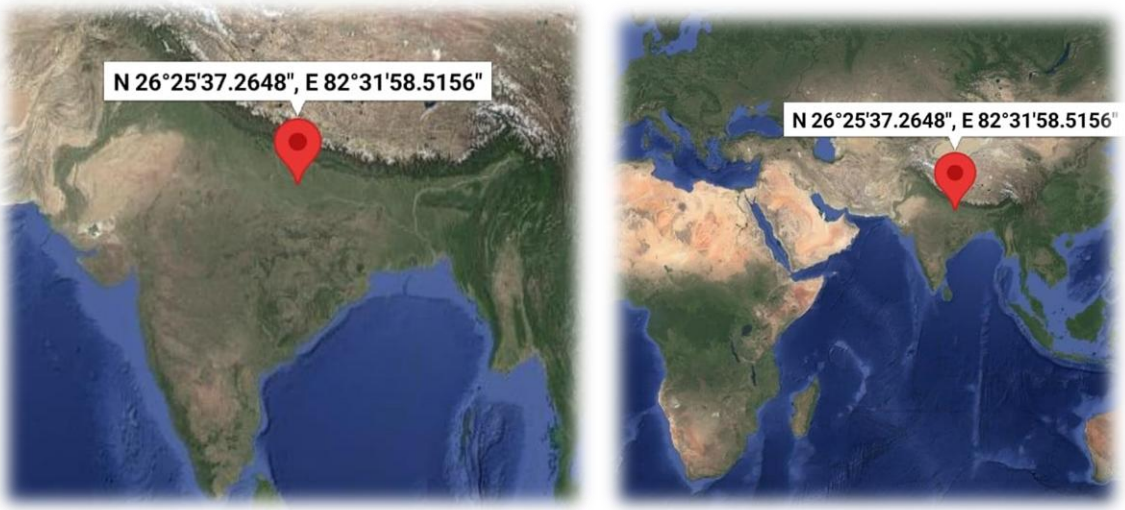

मुग़ल सम्राट अक़बर द्वारा निर्मित किले वाली अथवा नवाबी मस्ज़िद (अक़बरपुर, अम्बेडकर नगर) का भारत एवं एशिया में अवस्थिति का सेटेलाइट से लिया गया दृश्य

भौगोलिक पृष्ठभूमि : अम्बेडकर नगर जनपद 26^0 28′ 6.22′′ उत्तरी अक्षांश तथा 82^0 41′ 29.55′′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 2,520 वर्ग किमी. अथवा 970 वर्ग मील है।[1] जनपद का मुख्यालय अक़बरपुर शहर में है जो तमसा नदी के किनारे स्थित है। यह नदी शहर को दो भागों शहज़ादपुर और अक़बरपुर में विभक्त करती है। घाघरा नदी इस जनपद के उत्तरी–पूर्वी भाग से होकर प्रवाहित होती है। इस जनपद के लगभग उत्तर में बस्ती जनपद, उत्तर–पूरब में संत कबीर नगर जनपद, पूरब में गोरखपुर जनपद, दक्षिण–पूरब में आज़मगढ़ जनपद, दक्षिण–पश्चिम में जौनपुर जनपद तथा सुल्तानपुर जनपद एवं उत्तर–पश्चिम में फैज़ाबाद जनपद स्थित हैं।[2] इस जनपद के विषय में यह रोचक बात है कि आज़ादी के पश्चात् यह फैज़ाबाद जनपद में समाहित था किन्तु 29 सितम्बर 1995 को स्वतन्त्र जिला बनने की घोषणा के पश्चात यह जनपद अस्तित्व में आया।[3]

मुग़ल सत्ता लगभग समस्त भारत सहित लाहौर तथा अफ़गानिस्तान तक फैली हुई थी ऐसे में इस वंश की अधीनता से अम्बेडकर नगर जनपद भला कैसे अछूता रह सकता था। हमें ज्ञात है कि मुग़ल बादशाहों, उनके सिपहसालारों, स्थानीय एवं केन्द्रीय मंत्रियों, सामन्तों तथा कमाण्डरों द्वारा लाहौर से लेकर बंगाल तथा कश्मीर से लेकर आंध्र प्रदेश तक के भू–भाग पर मुग़ल स्थापत्य का निर्माण करवाया जिनमें से अधिकांश इण्डो–फ़ार्सियन तथा इण्डो–ईरानियन स्थापत्य शैली के अत्यन्त निकट हैं। बड़े–बड़े तथा महत्वपूर्ण शहरों एवं प्रमुख स्थानों पर अपना आधिपत्य कर इन मुग़ल बादशाहों ने अनेक किलों जैसे– इलाहाबाद का किला, आगरा का किला, दिल्ली का किला इत्यादि किलों का निर्माण करवाया। इतना ही नहीं इन्होंने पीरों की मज़ारों तथा अपने सिपहसालारों एवं स्वयं के मक़बरे भी निर्मित करवाये। भारत में प्रथम मक़बरा निर्माण करने का श्रेय इल्बरी तुर्क शासक इल्तुतमिश को है जिसे इतिहास में गुलामों का गुलाम कहा जाता है।[4]

इसी क्रम में मुग़ल शासकों द्वारा फैज़ाबाद जनपद पर भी अधिकार कर लिया गया। मुग़ल वंश का प्रथम शासक बाबर था जो अंधीजान नगर, फ़रगना घाटी (उज्बेकिस्तान) का निवासी था।[5]

ऐसा मान सकते है कि ज़ब बाबर पूरब विज़य के लिए निकला होगा तब वह दिल्ली से अम्बेडकर नगर होता हुआ पूरब की तरफ़ गया होगा। इस क्रम में यह सम्भव है कि उसने इस क्षेत्र में अपना कोई सिपहसालार नियुक्त किया हो।

बहराइच (उत्तर प्रदेश) में स्थित सैयद सालार मसूद गाज़ी की दरग़ाह

विकीपीडिया के अध्ययन तथा जनश्रुतियों से ऐसा पता चलता है कि उत्तर प्रदेश के बहराइच वाले क्षेत्र पर सर्वप्रथम महमूद के भांजे सालार मसूद गाज़ी ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। 12वीं शताब्दी तक इसकी पूज़ा एक मुस्लिम संत के रूप में होने लगी थी। वर्तमान में इसकी दरग़ाह बहराइच में ही स्थित है। ऐसा माना जाता है कि सुहेलदेव नामक स्थानीय शासक से इसका युद्ध भी हुआ था। वर्तमान में बहराइच निवासी इसकी पूज़ा अपने आराध्य के रूप में करते हैं।[6]

ऐसा माना जाता है कि अम्बेडकर नगर जनपद के भुजगी और सुरहुरपुर रियासत पर सालार मसूद ग़ाजी ने आधिपत्य कर लिया था। चूंकि मसूद ग़ाज़ी का समय 1014–1034 ई0 तक था अतः कल्पना किया जा सकता है कि इस जनपद पर मुसलमानों का आधिपत्य लगभग 11वीं शताब्दी तक स्पष्ट रूप से हो गया था।[7]

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस जनपद पर दिल्ली सल्तनत के सम्राटों तथा मुग़ल बादशाहों दोनों ने शासन किया होगा। यहाँ प्रमुख रूप से मुग़ल शासकों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगत है। चूंकि मुग़ल बादशाह बाबर ज़ब तक रहा तब तक अपने शत्रुओं से युद्ध करता रहा किन्तु उसके अन्दर साम्राज्य विस्तार की भी लालसा बलवती होती जा रही थी किन्तु उसने इस क्षेत्र पर प्रत्यक्ष शासन किया हो यह बात समीचीन नहीं प्रतीत होती है। बहुत सम्भव है कि उसका कोई सिपहसालार अम्बेडकर नगर जनपद क्षेत्र में उसके साम्राज्य की देख–रेख के लिए नियुक्त किया गया हो।

26 दिसम्बर 1530 ई0 में बाबर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र हुमायूँ मुग़ल सिंहासन पर आसीन हुआ। यहाँ यह ध्यातव्य है कि हुमायूँ को अपने पिता से विरासत में एक विस्तृत साम्राज्य प्राप्त हुआ था। हुमायूँ भी एक महत्वाकांक्षी शासक था ज्योतिष में उसकी अटूट आस्था थी जिस कारण वह सप्ताह में सात रंग के कपड़े पहना करता था। बहुत सम्भव है कि शेरशाह से विजय अभियान के क्रम में उसका भी आगमन अम्बेडकर नगर की भूमि पर हुआ हो उसने भी सिपहसालारों अथवा कमाण्डरों की सहायता से

अप्रत्यक्ष रूप से इस जनपद पर शासन किया हो। वीकिपीडिया से ज्ञात होता है कि मुग़ल शासकों के समय अम्बेडकर नगर का अधिकांश भाग वनाच्छादित था। 27 जनवरी 1556 ई0 में हुमायूँ की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र अक़बर मुग़ल सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। अक़बर के काल में सम्पूर्ण भारत में 15 सूबे हो गये थे। अक़बर ऐसा पहला मुग़ल शासक था जिसने अपने साम्राज्य को सूबों में विभाजित किया था।[8] सम्भवतः अम्बेडकर नगर जनपद अवध सूबे के अन्तर्गत आता था।

मुग़ल सम्राट अक़बर द्वारा निर्मित किले वाली अथवा नवाबी मस्ज़िद (अक़बरपुर, अम्बेडकर नगर)

ऐसा माना जाता है कि 1566 ई0 में सम्राट अक़बर स्वयं अम्बेडकर नगर जनपद में आया था। वह जहां रुका था वर्तमान में उसको तहसील तिराहे के नाम से जाना जाता है। इस्लाम में जुम्मे की नमाज़ का अवर्णनीय महत्व है अतः इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अक़बर ने अम्बेडकर नगर तहसील तिराहे के बग़ल में एक मस्ज़िद निर्माण का आदेश दिया था वर्तमान में यह **नवाबी मस्ज़िद या किला वाली मस्ज़िद** के नाम से प्रसिद्ध है जो 26^0 25′ 37.26′′ उत्तरी अक्षांश तथा 82^0 31′ 58.51′′ पूर्वी देशांतर के मध्य अक़बरपुर–फ़ैज़ाबाद (अयोध्या) मार्ग पर स्थित है। अक़बर ने इस स्थान की महत्ता को समझते हुए अपने नाम पर यहां एक कस्बा बसाया जिसे आज़ अक़बरपुर के नाम से जाना जाता है।

मुग़ल सम्राट अक़बर द्वारा शहज़ादपुर (अम्बेडकर नगर) में तमसा नदी पर बनवाया गया पुल जो अब सीमेन्टेड है

तमसा नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचने का कोई मार्ग न होने के कारण अक़बर ने तमसा पर एक लकड़ी के पुल का निर्माण करवाया जो वर्तमान में अक़बरपुर को शहज़ादपुर से जोड़ता है। बहुत समय तक यह शाही पुल के रूप में विख्यात रहा किन्तु कालान्तर में शहर की आबादी में वृद्धि होने तथा यातायात की सुविधा के निमित्त इस पुल को पक्का बना दिया गया। अक़बर के आदेश पर उसके शहज़ादे सलीम के सम्मान में शहज़ादपुर कस्बे का निर्माण किया गया। अक़बरपुर से लगभग 25 किमी. की दूरी पर तमसा (टोंस नदी) के किनारे स्थित भू–भाग पर भी अक़बर के मूल नाम जलालुद्दीन के आधार पर जलालपुर नगर की स्थापना की गई। एक ईरानी सरदार नकी के नाम पर जलालपुर कस्बे से आगे नग़पुर नाम से एक अन्य कस्बे का निर्माण किया गया। वर्तमान में ये दोनों ऐतिहासिक क़स्बे वाणिज्यिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हैं।[9]

अक़बर द्वारा शाही पालकी के साथ अम्बेडकर नगर के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया गया। ऐतिहासिक स्रोतों से ज्ञात होता है कि अक़बर का सम्बन्ध जौनपुर से भी रहा है। यहां के एक मौलाना द्वारा उसके ख़िलाफ़ फ़तवा जारी किया गया था। चूंकि अम्बेडकर नगर जौनपुर से अधिक दूरी पर स्थित नहीं है। अतः मुग़ल सम्राट अक़बर का इस क्षेत्र से चिर परिचित होना लाज़मी था।

जनपद अम्बेडकर नगर के सुरहुरपुर क्षेत्र में पुरातात्त्विक सर्वेक्षण करते समय लेखक को एक टीले से उत्तरी काले चमकीले मृद्भाण्ड संस्कृति से लेकर मध्य कालीन संस्कृति तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इन मध्य कालीन मृद्–पात्रों में घड़े, हांडी, कलश, ज़ार, सुराही, टोंटीदार पात्र आदि की प्राप्ति हुई है जो मुग़ल काल से सम्बद्ध प्रतीत होते हैं। चूंकि

अक़बर द्वारा अम्बेडकर नगर के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया गया था तथा सुरहुरपुर अक़बरपुर से जौनपुर जाने वाले मार्ग पर पड़ता है इसके अतिरिक्त सैयद सालार मसूद गाजी ने बहुत पहले ही सुरहुरपुर रियासत पर क़ब्ज़ा कर मुसलमानों को बसा दिया था अतः यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र से प्राप्त मृद्–पात्र खण्डों का सम्बन्ध मसूद गाज़ी तथा मुग़ल सम्राट अक़बर से रहा होगा। यदि इस स्थल का पुरातात्त्विक उत्खनन कार्य कराया जाये तो इस्लाम संस्कृति से सम्बन्धित अन्य अनेक तथ्यों पर विस्तृत प्रकाश पड़ सकता है।[10]

अपने जीवन काल में मुग़ल सम्राट अक़बर अम्बेडकर नग़र के भू–भाग पर कितनी बार आया था इस विषय में किसी भी स्रोत से किसी भी प्रकार की सूचना का अभाव है। किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ज़ब–ज़ब वह विजय अभियान के क्रम में इस जनपद के निकट से गुज़रा होगा तब–तब उसका पदार्पण इस जनपद में अवश्य हुआ होगा। अक़बर के पश्चात् 1605 ई0 में उसका पुत्र सलीम इतिहास में जिसे जहांगीर के नाम से जाना जाता है मुग़ल सिंहासन का हक़दार हुआ उसने इस जनपद का भ्रमण किया था अथवा नहीं इस विषय में सूचना का अभाव है। ऐसा प्रतीत होता है कि अम्बेडकर नग़र जनपद पर उसने अपने विस्वस्त सिपहसालारों एवं सामंतों की सहायता से अप्रत्क्ष रूप में शासन किया होगा। जहांगीर के पश्चात उसके पुत्र शाहजहाँ मुग़ल साम्राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। अपने साम्राज्य विस्तार के क्रम में उसने अम्बेडकर नगर पर भी सिपहसालारों एवं विस्वस्त मन्त्रियों की सहायता से शासन किया होगा। उसके द्वारा निर्मित कराये गये किसी भी प्रकार के स्थापत्य के साक्ष्य इस जनपद से नहीं प्राप्त हुए हैं। शाहजहाँ के पश्चात उसका पुत्र आलमगीर, अबुल मुज़्जफ्फर शिहाबुद्दीन किराने–ए–सानी आला हज़रत औरंगज़ेब के नाम से मुग़ल सिंहासन पर आसीन हुआ वह अपने जीवन भर दक्षिण भारत के राजाओं तथा मराठों से युद्ध करने में व्यस्त रहा। जहाँगीर के समय में उसको दक्षिण का गवर्नर नियुक्त किया गया था।[11]

सम्भवतः उसने भी अपने पिता शाहजहाँ के समान इस जनपद पर अप्रत्यक्ष रूप से शासन किया हो। बाद के उत्तर मुग़ल शासकों द्वारा भी इस क्षेत्र पर अप्रत्यक्ष रूप से शासन करने के संकेत मिलते हैं। बहुत सम्भव है कि इस समय के मुग़ल बादशाह अवध के नवाबों के माध्यम से इस क्षेत्र पर शासन किये हों।

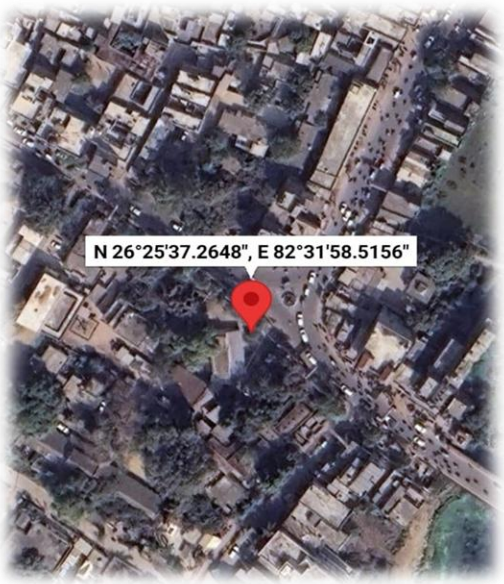

मुग़ल सम्राट अक़बर द्वारा निर्मित किले वाली अथवा नवाबी मस्ज़िद (अक़बरपुर, अम्बेडकर नगर) का सेटेलाइट से लिया गया दृश्य

निष्कर्ष : उफ्रोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अम्बेडकर नगर जनपद पर मुग़ल बादशाहों द्वारा कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप से शासन किया जाता रहा। इसी क्रम में कुछ स्मारकों का निर्माण भी कराया गया बहुत सम्भव है कि इनमें से अधिकांश स्थापत्य समाप्त हो गये हों। अभी भी विधिवत पुरातात्त्विक सर्वेक्षण एवं उत्खनन के माध्यम से इस काल के अन्य अवशेष अम्बेडकर नगर जनपद से प्राप्त किये जा सकते हैं। जनपद में किये गये इस कार्य का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष लाभ भविष्य में इस जनपद पर शोध करने वाले अध्येताओं को अवश्य प्राप्त हो सकेगा।

संदर्भ

1.*https://www.latlong.net/place/ambedkar-nagar-uttar-pradesh-india-10239.html, site visited 14/08/2025*

2. *https://hi.wikipedia.org/wiki/**अम्बेडकर –नगर–जिला,** site visited 15/08/2025*

3. *https://ambedkarnagar.nic.in/hi/**इतिहास** , site visited 15/08/2025*

4. *https://hi.wikipedia.org/wiki/**इल्तुतमिश** , site visited 15/08/2025*

5. *https://hi.wikipedia.org/wiki/**बाबर** , site visited 15/08/2025*

6. *https://hi.wikipedia.org/wiki/**सैय्द सालार मसूद गाज़ी,** site visited 15/08/2025*

7. *https://ambedkarnagar.nic.in/hi/**इतिहास** , site visited 15/08/2025*

8. श्याम प्रकाश,, लेख– अक़बर कालीन बावली : एक ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक सर्वेक्षण, देखें:–*प्रिंटिंग एरिया,* हर्षवर्द्धन प्रा0 लि0, बीड, महाराष्ट्र, वॉल्यूम–01, इश्यू–61, जनवरी 2020, पृ. 112

9. *https://ambedkarnagar.nic.in/hi/***इतिहास** *site visited 15/08/2025*

10. श्याम प्रकाश, लेख–सुरहुरपुर से प्राप्त हुए प्राचीन संस्कृति के अवशेष, दृष्टव्य:–*परिधि न्यूज़,* अम्बेडकर नगर संस्करण, आलापुर/अकबरपुर, 19 से 25 मार्च 2015, पृ. 2 एवं श्याम प्रकाश, लेख–अम्बेडकर नगर जनपद के सुरहुरपुर पुरास्थल का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण देखें:– *Quest Journals, Journal of Research in Humanities and Social Science* Volume 11 ~ Issue 7 (2023) ISSN(Online):2321-9467. pp: 114-127

11. *https://hi.wikipedia.org/wiki/***औरंगज़ेब** *site visited 15/08/2025*